प्रकाशकः—

श्री मां-मन्दिर

मन्डी धनौरा, मुरादाबाद

(उत्तर प्रदेश)

दूसरी बार, सन् १६५१ ई०

मूल्य ।॥) आने

सुदर्शन प्रेस

गली खजूर, देहली।

❀ परिचय ❀

कोई धन धाम यश, नारी सुत चाहता है,
कोई छोड़ इन्हें गया; घर से निकल है।
स्वार्थ साधना में कोई, सत्य को छिपाये ! लिये,
हाथ में सुमरनी, कतरनी 'बगल' है ॥
जीवन का तत्व औ, महत्व जानने के हेतु;
कोई बन बैठा जड़; भरत अटल है।
जग तो 'विकल' है न; इसमें है झूंठ किन्तु;
जग को बनाने वाला; प्रथम 'विकल' है ॥

हृदय हिलोर

देखी है ! धनेश धन; धारियों की धूम धाम,
सर्व सम्पदा सदैव, द्वार पै खड़ी रही।
वीरता प्रचंड देख, कांप गये लोक पाल,
डोल गई धरणी पै, धाक ही बड़ी रही ॥
ऋषि, मुनि, साधु सन्त, देखे हैं अनन्य भक्त,
जीवन की हर एक, सफल घड़ी रही।
अन्त काल विधि का, विधान देखने को शेष,
'विकल' मसान बीच, 'खोपड़ी' पड़ी रही ॥

सुकुमारता पै सुकुमारता को वार दिया,
भार क्या ? सहेंगे हाथ, फूल की छड़ी रही।
चन्द्रमुखी उन्नत-उरोज मृगनैनी बाल,
नवल नवेली भुज-पाश जकड़ी रही ॥
राग रस रूप रंग, यौवन तरंग संग,
रति औ अनंग की, उमंग तकड़ी रही।
अन्त काल विधि का विधान देखने को शेष,
'विकल' मसान बीच, 'खोपड़ी पड़ी रही ॥

हृदय हिलोर

ऊँचे ऊँचे महलों में, करता निवास कोई,
देखलो किसी के लिये, टूटी झोंपड़ी रही।
यौवन तरग में चला है ! कोई सीना तान,
कमर किसी की झुकी, हाथ लकड़ी रही ॥
वैभव सुयश पाय, कोई बन बैठा प्रभु,
किसी की उसी के पग, नाक रगड़ी रही।
अन्तकाल विध का, विधान देखने को शेष,
'विकल' मसान बीच, 'खोपड़ी' पड़ी रही ॥

उर में स्नेह का नहीं था ! लेश मात्र नाम,
उलझी उन्हीं की तभी जीवन लड़ी रही।
दीन दुखी रोगी औ कुरूप की दशा को देख,
नाक हृदय हीनों की, सदैव सुकड़ी रही ॥
जी भर हंसे थे कभी, कितने ही भाग्यवान,
हतभागियों की ! लगी, आंखों से झड़ी रही।
अन्तकाल विधि का विधान देखने को शेष,
'विकल' मसान बीच 'खोपड़ी' पड़ी रही ॥

आई जब 'गंध' पत झड़ की बसन्त में तो,
नई कोंपलें ही क्या, नवीन किसलय ही क्या।
शीतल सुगन्ध मंद! वायु में छिपा है ताप,
तब तो किसी का दुःख, हरेगी मलय ही क्या॥
जीव निर्जीव पर! मृत्यु की लगी हैं आंख,
फिर कोई विश्व बीच बोल दो अभय ही क्या।
पूर्ण एक ब्रह्म है, अपूर्ण है समस्त विश्व,
'विकल' अपूर्ण का, अपूर्ण परिचय ही क्या॥

कठिन आघात जो न, सह सका चुप चाप,
मरे के समान है वो, जीवित हृदय ही क्या।
अपने को जीत ही न पाया! जो महान मूढ़,
और को करेगा वह, बावला विजय ही क्या॥
विश्व रंग-मंच पर, खेलने अनेक खेल,
होगया पटाक्षेप, शेष अभिनय ही क्या।
पूर्ण एक ब्रह्म है! अपूर्ण है समस्त विश्व,
'विकल' अपूर्ण का अपूर्ण परिचय ही क्या॥

हृदय हिलोर

आंख में समाई जब 'विकल' किसी की आंख,
आंख कल पाती नहीं, आंख कल पाती हैं।
आंख आँख ही में आंख, धूल झोंक देती कभी,
आंख मींच लेती आंख, तले भी न लाती हैं॥
आंख के नशे में झूम, आंख काढ़ लेती आंख,
आँख की निठुरता से, आंख भर आती हैं।
आंख लग जाती तब, आँख लगती है कब,
आंख नहीं लगती तो, आँख लग जाती हैं॥

मेरा लक्ष सामने है, पीछे क्यों हटाऊँ पैर,
देख 'आपदायें' न विराम करता हूं मैं।
साहस सरीखा जब, साथी मेरे साथ में है,
नाम न 'विकल' बदनाम करता हूं मैं॥
मन के विकार दूर, करने के लिये आप,
मौन रहता हूं! यही काम करता हूं मैं।
पातकी प्रपंची शठ, चालबाज धूर्तराज,
दम्भियों को दूर से 'प्रणाम' करता हूं मैं॥

छोड़ी दुनियां की आश, तुझ पै लगी हैं आंख,
अपना सहारा अब, आप ही ! रहा हूं मैं ।
सुई प्रेम पलकों की, आंसुओं की डोर डार,
'विकल' हृदय के, सभी घाव सी रहा हूं मैं ॥
दुख के गरल का न, सुख की सुधा का ध्यान,
आप जो पिलाते हैं, वही तो पी रहा हूं मैं ।
जैसा भी हूं जो कुछ हूं, तुझसे छिपा ही क्या है,
तेरी ही कृपा की कोर, से तो जी रहा हूं मैं ॥

नीच कोई मुझसा ! हुआ, न होगा विश्व बीच,
मेरी अब और नहीं, बुद्धि भ्रष्ट कीजिये ।
अपने किये पै रोया, हृदय अति पश्चाताप,
त्राहि ! त्राहि ! शरणेश, प्रेम वृष्टि कीजिये ।
उर में सदैव ! सुविचार ही समाये रहें,
भव्य भावनाओं की, नवीन सृष्टि कीजिये ॥
मांगता 'विकल' भीख, आप से दया निधान,
दीन बन्धु दीन पै, दया की दृष्टि कीजिये ॥

हृदय हिलोर

[१]

कायर कलंकी कामी, क्रोधी या कपूत कहो,
बोलियों के तन बीच, झूले ही ! भले रहैं ।
दुनियां दुरंगी मुझे, तेरी परवाह नहीं,
चाहे आस्तीन, में सपूले ही पले रहैं ॥
आती रहे नित याद, जिससे तुम्हारी नाथ,
करुणानिधान आप, भूले ही भले रहैं ।
चाहना नहीं है कुछ, चाहना 'विकल' एक
उर के फफोले नित , फूले ही फले रहैं ॥

[२]

दिल में दिखाई दिलदार ने झलक एक,
लगी न पलक आह! जीते मर लेंगे हम।
डाल बैठे सोचे बिन, सांप की बंबी में हाथ,
अपने किये को अब, आप भर लेंगे हम॥
तुझको कसम जुल्म, ज़ालिम किये जा खूब,
चीर के कलेजा उर, धीर धर लेंगे हम।
'विकल' जलेगी जब, उर में वियोग ज्वाल
ठण्डी भर सांसै दिल, ठण्डाकर लैंगे हम॥

[३]

रक्षक गरीब के न, भक्षक धनी के हम,
सीना सह ज़ोर नहीं, सीना सह जार से।
चाहना नहीं है कुछ, उर के उदार से भी,
कहना नहीं है कुछ, उर के कठोर से॥
दीन और दुनियां से, दोनों उठा बैठे हाथ,
दिन रात दिल में, दरद एक ओर से।
घायल 'विकल' आह! जायेंगे निकल प्राण,
मेरी ओर देखना न, कोई दृगकोर से॥

[४]

'विकल' वियोगकी, जली जो उर बीच ज्वाल,
जल गये ज्वालामुखी, जला आसमान है।
ठण्डी सांस ठण्डा कर, देतो जमजाता तब,
पाला ये नहीं है मेरा, आला अरमान है॥
करके किसीकी याद, रोया बना डाला आज,
अश्रु बिन्दुओं ने हिन्द, सागर महान है।
मांग मानसून उठा, कुहरा उसासन का,
मेरी एक आह! ने बनाया आसमान है॥

[५]

जलता वियोग की न, आग में कलेजा कभी,
आह! भरता है न, कराह ही लगाता है।
लगन जो लगी उसी, लगन में मगन हो,
आफत हजार पड़ें, हर्ष से उठाता है॥
'विकल' न पाता कल, एक पल को भी कभी,
एक दूसरे को दूर, ही से देख आता है।
चित्त में हो चाह बस, यही है पवित्र प्रेम,
अंक लग जाने, से कलंक लग जाता है॥

[६]

देखा ही नहीं है कभी, कैसा तेरा रूप रंग,
जो कुछ सुना है वैसा, चित्र खींच लूँगा मैं।
'विकल' विभूति मल, जग में तलाश करूँ,
मिल जाय उर से, लगाय भींच लूँगा मैं॥
आशाकी सुबेल कभी, जीते जी न सूखने दूँ,
नयनों से नीर नित, बहा सींच लूँगा मैं।
देखना निकल कहाँ, जायगा तू चित चोर,
आँख में बसा है जब, आँख मींच लूँगा मैं॥

[७]

देखना है देखना, तुम्हारा कब देखना हो,
बिन देखे दिल के, हमारे कर डाली फांक।
पास नहीं आते छिप, जाते चले जाते कहाँ,
हम घूम जंगल में, 'विकल' लगाते हांक॥
हार झकमार बैठ, उर में निहारता हूँ,
झुकि झुकि झूम झूम बोल क्यों रहा तू झांक।
आना या न आना देख जाना मरने के बाद,
दर्शन को तेरे खुली होगी मेरी दोनों आंख॥

[८]

चाहना में हाथ पैर, पीट पीट हूब गये,
आज तक इसकी, मिली है कहीं थाह ना।
चाहना है प्रेम का, अथाह है समुद्र देख,
यहाँ ज्वार भाटा नहीं, कमक कराहना॥
राह ना हो अलग, अलग एक राह रहे,
प्रेम तो तभी है जब, 'विकल' हो चाहना।
चाहना से चाहना है, चाहना से चाहना है,
चाहना है चाहना है, चाहना है चाहना॥

[९]

कर डाला घायल निकाला, दम वेदम का,
'विकल' न कल एक, पल मिली आहों से।
सूख कर कांटा होगया हूँ उठा जाता नहीं,
खून अब आने लगा, आंसुवों की राहों से॥
होटो कहीं बात आज, कोठो चढ़ी देखी हम,
मुफ्त बदनाम हुये, झूँठी अफ़वाहों से।
देखा भी न देखा कुछ, देखा भी न देखा आह!
देखा खूब ज़ालिम ने, तिरछी निगाहों से॥

[१०]

जाता है न दूर चढ़ा, ऐसा ही सरूर रहे,
घूम घूम चारों ओर, चक्कर लगाता है।
गाता है गुणानुवाद, झुकि झुकि झूमि झूमि,
चूम चूम चरणों को, नित सिर नाता है॥
नाता है अनोखा कल, पाता न 'विकल' कभी,
देख देख दूना दिल, दीपक जलाता है।
लाता है सुप्रेम रंग, ढंग दुनियां को कर,
जाने किस उमंग में, पतंग जल जाता है॥

[११]

हरी हरी दूब खूब, चरै नित जंगल में,
ठण्डा नीर पीता नित, मंगल मनाता है।
संगी साथियों के संग, कभी रंग रेली कर,
आई जो उचंग दौड़, चौकड़ी लगाता है।
ध्यानियों के ध्यान में न, आया कहाँ ध्यान गया,
आपा भूल जाता है 'विकल' झूम जाता है।
किसकी सु-तान पर, होता बलिदान मृग,
बान की अनी को बड़ी, शान से जो खाता है॥

[१२]

दिन रात दुश्मन, छाती पै दलेंगे मूँग,
जिसके बसेगी जी में, वो-ही जड़ आयेगा।
गंगा सिंध ब्रह्मपुत्र, नर्बदा न होगी जब,
कौन शस्य श्याम भूमि, भारत बनायेगा।
हिन्द महा सागर न, सागर अरब रहे,
मानसून रोक कौन, वारि बरसायेगा॥
छेड़ो मत रहने दो यूं, हाँ न खुलावो मूँह,
'विकल'की आह से हिमालय गल जायेगा॥

[१३]

कंटक बिछे हों मग, छाले भी पड़े हों पग,
आगे ही बढ़ूँगा, भूल पीछे-न हटूँगा मैं।
वीर एक बार मरैं, कायर हज़ार बार,
धार धीरता को भव-सिन्धु से तरूँगा मैं।
जीवन के ध्येय पर, आँखे नित लगी रहें,
कर में कलम की, कृपाण ही गहूँगा मैं॥
"देश परदेश किसी, भेष में कहीं भी रहूँ,
'हिन्दी हिन्द हिन्दू-हित 'विकल' रहूँगा मैं"।

[१४]

मूरख को दिया राज, सुख का समाज साज,
नाचते 'विकल' ज्ञानी, धार पै दुधारे की ।
सोने में सुगंध नहीं, कोयल को रूप नहीं,
कंटक गुलाब खोई, शान सिंधु खारे की ॥
नाफ़में भरी है मुश्क, क़दर न जानी हाय !
हिरन करी है बुद्धि, हिरन बिचारे की ।
एक मुख वारे की न, दोऊ तीन वारे की न,
देखो करतूत ऊत, चार मुख वारे की ॥

[१५]

मल मल कर पैर, रखें मखमल पर,
नाजुक मिजाज़ आप, अपनी ही शान के ।
केवड़ा, गुलाब, खस, संदल, अगर, मुश्क,
चैन नहीं पायें बिना, पान ज़ाफ़रान के ॥
सागिर सुराही साक़ी, सुंदरी शराब सुर्ख़,
'विकल' निशाने, नाजनी के नैन बान के ।
जिनके सितारे थे, बुलंद दुनियाँ में कल,
गिनते बिचारे आज, तारे आसमान के ॥

[१६]

माँगा है न मांगूँगा मैं, मांगता हूँ वर मात,
शारदे तू सार आज, सारे काज सारदे।
धारदे हृदय धीर, साहस गंभीरता को,
वीरता भरन वाली, वीरता प्रसार दे॥
काम क्रोध लोभ मोह, दम्भियों को दूर कर,
गल में 'विकल' के विजय माल डार दे।
चार दे न तीन दे न, दो दे एक ही को दे तू,
कर तलवार दे कि, सर कर धार दे॥

[१७]

दानी महादानी वर-दानी वर दायनी दे,
सिंह वाहनी तू दाहिनी हो होत वार है।
मांगना न जानूँ मैं न, माँगने को आया मात,
शीश भेट लाया सुत, प्रेम उपहार है॥
तू भी मौन मैं भी मौन 'विकल' है दोनों आज,
एक ही है ध्येय और, एक ही विचार है।
तुझसे न मांगू बोल, किससे मैं मांगू फिर,
मां से मांगना तो जन्म, सिद्ध अधिकार है॥

[१८]

भारतीय गौर-व है लिखना बसुन्धरा पै,
लेखनी बनादे तलवार की निराली तू।
लोथन पै लोथन के, लगा ढेर देर कैसी,
कैसा हेर फेर चढ़, शेर शेर वाली तू॥
पीकर अघाना खूब, मल के नहाना गान,
गाना मन मांना नाच, बजा बजा ताली तू।
दुष्ट ध्वंस वाली वार, जाये नहीं खाली देख,
रक्त की बहा दे आज, नाली शक्तिशाली तू॥

[१९]

भारती भवानी भर, भव्य भाव भावनायें,
क्यों न एक रंग में सभी को बोर डारती।
डारती गले में तूही, वीरों के विजय माल,
पापियों के पाप पुञ्ज, पातक पजारती॥
जारती है ज़ालिम के, जबर ज़ुलुम जोर,
'विकल' हो तारती है, 'विकल' की आरती।
आरती तुम्हारी मैं, उतारूं तुम तारो देवि;
मेरे देश भारत के, भार भव्य भारती॥

[२०]

बेच दी 'विकल' चंद कौड़ी में स्वतन्त्रता को,
दम्भी देशद्रोहियों का, ध्यान धर लैना माँ।
छाती चढ़ चाटजा कलेजा लेजा नाड़ तोड़,
खाली कर खप्पर को, खूब भर लैना माँ॥
जोगनी जमातिन औ, साथिन के खेलने को,
आंतन निकाल कर, काट सर लैना माँ।
चाब कड़ा कड़ हाड़, चर्बी चटाखे मार,
देश दुख देवा का, कलेवा कर लैना माँ॥

[२१]

अपने करों से निज, घरों में लगाते आग,
करै भला भूल न, विधाता छल छोही का।
दलते हैं छातियों पै मूंग नित बन्धुवों की,
मुंह भी देखना है पाप नीच निर्मोही का॥
भार यार ऐसा बदकार-न मिलेगा भार,
भारत का टार कर, वार तू सिरोही का।
'विकल' मलेजा लेजा, लेजा चीर भेजा अरी!
नेजा मों दलेजा माँ! कलेजा देशद्रोही का॥

[२२]

हाला मधुशाला वाला, प्याला कर चूर चूर,
बिनही पिलाये मतवाला तू बनादे आज।
पूजा न नमाज पाठ, रोज़ा न क़ुरान वेद,
मसजिद मंदिर में, ताला तू लगा दे आज॥
भेद भाव भूल जाँय, आपस के बैर त्याग,
एक रस एकता का, प्याला तू पिलादे आज।
'विकल' हथेली पर रख लैं उतार शीश,
उरमें स्वतन्त्रता की ज्वाला तू जलादे आज॥

[२३]

एरी रण चंडी रण, दुंदभी बजेगी कब,
आई रण वेला मौन, क्यों है किलकार ले।
क्या नहीं सहा है बोल, और क्या सहेंगे हम,
दीन दुखियों की दशा, अब तो निहार ले।
जन्मभूमि जननी का, जाना न महत्व हाय!
देशद्रोहियों के मात, शीश को उतार ले॥
'विकल' सुनादे प्रयलंकारी अमर गान,
आंतन की तांत बना, धड़ का सितार ले॥

[२४]

भारत में रह जिसे, भारत का मान नहीं,
लानत हजार बार, भारती कहाने की।
देश की दशा के साथ,दुखी सुखी होता रहे,
'विकल' निशानी यही, देशके दिवाने की॥
कठिन ठनी है आन, देखो भगवान बान,
हमें जुल्म सहने की, उन्हें जुल्म ढाने की।
गाने हों स्वदेशी ताने बाने हों स्वदेशी ठान,
ठाने हों स्वदेश हित, मर मिट जाने की॥

[२५]

लोट लोट भारती की, रज में पले हैं हम,
कैसे भूलें बाल पन,बान धूल खाने की।
जिसका सुधा के सम, नीर नित पीते रहे,
दिल पे पड़ी है छाप, एक एक दाने की॥
आज उसी जननी को देख पराधीन हाय !
'विकल' है बात क्रूर कायर कहाने की।
गाने हों स्वदेशी ताने बाने हों स्वदेशी ठान,
ठाने हों स्वदेश हित, मर मिट जाने की॥

[२६]

भेद भाव राग द्वेष, त्याग भारतीय आज,
देखो निज दशा दशा, बदली ज़माने की ;
छूत छात ही से बनी, बात गई बन गए,
'विकल' गुलाम, खूब अकल ठिकाने की ॥
होश मद होश करो, कर लो तिरंगा धार,
रीति है अनौखी यही देश को जगाने की ।
गाने हों स्वदेशी ताने बाने हों स्वदेशी ठान,
ठाने हो स्वदेश हित, मर मिट जाने की ॥

[२७]

जी भर के ज़ालिम, सताले तू जलाले खूब,
हविश मिटाले घड़ी, हाथ ये न आने की ।
सीखली है हमने भी 'विकल' अनौखी रीति,
मोहन की मोहनीसे, विश्व को रिझाने की ॥
जाने के लिये हैं जान, जानता जहान सब,
फिर पर-वाह क्या, हुई है जान जाने की ।
गाने हों स्वदेशी ताने बाने हों स्वदेशी ठान,
ठाने हों स्वदेश हित, मर मिट जाने की ॥

[२८]

चाहना है सुख साज राज की समाज की न,
चाहना है दर दर, भीख माँग लाने की।
चाहना है दुखियों के,दुख में लगाऊँ जान,
चाहना है सुयश, पताका फहराने की ॥
आशा हो निराशा लगी एक अभिलाषा रहै,
'विकल' स्वदेश हित,शीश को चढ़ाने की।
गाने हों स्वदेशी ताने बाने हों स्वदेशी ठान,
ठाने हो स्वदेश हित, मर मिट जाने की ॥

[२९]

छोड़ा सुख साज आज उर में विराजा देश,
वतन के लिये खाक तन पै रमाऊँगा।
भारतीय वीर हूं मैं, अमर करूंगा नाम,
बढ़ा हुआ पग भूल पीछे न हटाऊँगा ॥
प्रबल सबल हूं मैं निबल 'विकल' नहीं,
जो कुछ पड़ेगी वही, आपदा उठाऊँगा।
जपूंगा स्वदेशी मंत्र, त्याग दूं विदेशी वस्त्र,
होलिका जलाऊंगा मैं देश गुण गाऊँगा ॥

[३०]

नित ही चितूँगा निज, नैंनन से देश दशा,
कान जो सुनैं तो कथा, देश की सुनाऊँगा।
हाथ जो पसारूँ तो पसारूँ देश ही के काज,
नेह उर धारूँ तो मैं देश से लगाऊँगा॥
'विकल' निवारूँ दुख आरत हा! भारत के,
सब सुख वारूं सुख, दुख ही में पाऊंगा।
जपूंगा स्वदेशी मंत्र, त्याग दूँ विदेशी वस्त्र,
होलिका जलाऊँगा मैं, देश गुण गाऊँगा॥

[३१]

कैसे मरते हैं निज, देश हित भारतीय,
वीरता का पाठ आज, विश्व को पढ़ाऊँगा।
शक्ति से अहिंसा की मैं, हिंसा के उखाड़ूं पैर,
पशु बल निज तप, बल से मिटाऊंगा॥
दासता विलासता के, तोड़ बंधनों को आज,
राष्ट्रता की 'विकल' पताका फहराऊँगा।
जपूंगा स्वदेशी मंत्र, त्याग दूं विदेशी वस्त्र,
होलिका जलाऊंगा मैं, देश गुण गाऊंगा॥

[३२]

खेले खूब महमान, बन के हमारे खेल,
खेल खेल ही में धन, लूट लिया सारा है।
रहें जिस घर में हा! खोदते उसी की नींव,
पीटते हैं सभ्यता का, फिर भी नकारा है।
आते और जाते सदा, रहते मुसाफिर भी,
अपना बतावे कहाँ, उसका गुजारा है।
रहते थे रहते हैं, रहेंगे 'विकल' हम,
हम भारतीय देश, भारत हमारा है॥

[३३]

रोते थे बिलखते तड़फते न हटते था,
असहयोग मंत्र का, निराला प्रेम बोली में।
सोते से जगे थे देश, प्रेम में पगे थे वीर,
'विकल' थे दग्ध औ रंगे थे रंग गोली में।
निकली दुनाली पिचकारी से चिंगारी जब,
सीना तान वीर फाग, खेले खूब होली में।
होली थी सो होली अब होली है न होली होगी,
होनी थी सो होली खूब होली बारडोली में॥

[३४]

भोग में ही योग मुझे करुणा निधान मिला,
जटा जूट दण्ड न त्रिपुण्ड मृग छाला है।
'विकल' के दीनबन्धु धन्य दीनबन्धुता को,
तेरे ही कृपा ने नित, संकट में डाला है॥
अरमान एक एक, आहुती दे फूंकता हूं,
यज्ञ करने के लिये, विरह की ज्वाला है।
ध्यान धरने के लिये, उर में है घाव तेरा,
नाम जपने के लिये, आँसुओं की माला है।

[३५]

हो गया निराश आश, रही न किसी की अब,
भूले से भी जग की न, ओर मैं निहारूंगा।
आओ हृदयेश बैठ, जाओ हृदयासन पै,
'विकल' पदारविन्द, अश्रु से पखारूंगा॥
पत्र पुष्प भी तो नहीं, पूजन को रहे नाथ,
भव्य भावनाओं की सुमाल गल डारूंगा।
निश दिन जलती जो, उर में वियोग ज्वाल,
उससे तुम्हारी देव, आरती उतारूंगा॥

[३६]

लषण को देख राम, रो उठे दहाड़ मार,
छोड़े इस भांति कभी, आया न विचार में ।
सीता नहीं छूटे गढ़, लंका नहीं टूटे अब,
कैसे जीत होगी हाय, रावण से रार में ॥
'विकल' अवध में दिखाऊँ किस भाँति मुख,
बांधे मुझ पातकी को, कौन प्रेम तार में ।
पूछै जब मैया तब, कहा कहूं मैया बोल,
हाय रे कन्हैया छोड़ी, नैया मझधार में ॥

[३७]

घूम घूम आये घन, छाई घन घोर घटा,
महा अंधियारी निश, कुछ न दिखात है ।
चपला की कड़क से, उर में धड़क होत,
भड़क भड़क कै कलेजा जरो जात है ॥
शेर की दहाड़ और, खसन पहाड़ लगे,
नद का निनाद कान, पड़ी न सुनात है ।
जनक दुलारी रघुनन्दन की प्यारी सिय,
'विकल' विचारी वन बीच डर पात है ॥

[सत्ताईस]

[३८]

बस एक धेनु कामधेनु के समान होवे,
छीर पान करने को, पल्लव का दोना हो।
ओढ़ने को अम्बर का, अम्बर तना ही रहे,
गंग की सुरेती का, बिछाने को बिछौना हो॥
चन्द्र की हंसी के संग, हंसते हों तारागण,
चाटत शरीर को 'विकल' मृग छौना हो।
उर में बसा हो देश, प्रेम का नशा हो सभी,
विश्व एकसा हो विश्व, कालिमा को धोना हो॥

[३९]

भीषण दहाड़ मार, भीम सभा मध्य बोला,
नारी अपमानकी रही हैं मुझे आग भून।
बड़े बड़े नीतिवान, देख हा अनीति रहे,
बोलो क्या सभी की आज बदल गई है जून॥
कौरवों का बीज नाश, करके मैं पाऊं चैन,
देखनी 'विकल' दुर्योधन की ऊन दून।
जिस पै बिठाना चाहता है अरे! द्रोपदी को,
तेरे इसी जंघा का पिऊँगा गर्म गर्म खून॥

[४०]

खोलो दृग धर्मराज, धर्म का हुआ है अन्त,
धनुधारी वीर आज, काहे मौन धारे हैं।
भीम बली भूल गये, प्रण का रहा न भान,
क्या इसी गदा से केश सींचने विचारे हैं॥
'विकल' नकुल सहदेव ग्रीव डारे खड़े,
आँख मींच जाने दृश्य कौन सा निहारे हैं।
यशुमति वारे आज देर क्यों लगाई देख,
तेरे ही सहारे पर, पाँचों पति वारे हैं॥

[४१]

कब से रही मैं टेर, कीनी है कहाँ पै देर,
मेरी बेर श्याम कहाँ, कान तेल डारे हैं।
'विकल' न आये कल पाये है दुशासन हा!
नग्न करने की नींच, धारणा ही धारे हैं॥
सारी जाय सारी तो तू, सार ले सयाने श्याम,
जाती आज लाज काज, किसके न सारे हैं।
गुरु द्रोण विदुर न, बोले पिता भीष्म देख,
तेरे ही सहारे पर, सारे मतवारे हैं॥

[४२]

करुणानिधान हो क्यों, करुणा दिखाते नहीं,
करुणा के सिन्धु कहाँ, करुणा बिसारी है ।
पार ही न पाया तू समझ में न आया ईश,
दृष्टि जिस ओर गई, माया ही निहारी है ॥
'विकल' न पाई कल, एक पल को भी कभी,
काम क्रोध लोभ मोह, गल पाश डारी है ।
आपदा निवारो कृपा, कोरे से निहारो नाथ,
अरजी हमारी आगे, मरजी तुम्हारी है ॥

[४३]

राम अवतार लियो, रावण संहारने को,
कृष्ण रूप धार दियो, कंस को मिटाय कै ।
ध्रुव को बचाया प्रहलाद को लगाया कंठ,
तत्व बतलाया अमरत्व को पिलाय कै ॥
हरि ने पुकारा हरि, हरि दुख टारा हरि,
हरि से निकारा हरि, हना ग्राह आय कै ।
आरत 'विकल' रहा, भारत निहार श्याम,
ऐसे ही चितैहो कै चितै हो चिललाय कै ॥

[४४]

गणिका अजामिल प्रहलाद गज तारे पुनि,
चाऊर चबाय दुख, मेटिहौं सुदामा के।
द्रोपदी का अम्बर लौं, अम्बर बढ़ाय दीनों,
भेटे जाय मेटे सभी, ताप सत्य भामा के॥
तारे हौं न तारे हौं मैं, कहा कहूं बृजनाथ,
प्रेम में 'विकल' हुआ लोचनाभिरामा के।
होती यही शंका नाथ, पर जान तारे कैसे,
तुम तो कन्हैया हो हनैया कंस मामा के॥

[४५]

टेर सुन तेरी हेर, फेर नहीं देर करी,
कसक कलेजे उठी, भर आये दोऊ नैन।
छोड़ सब वाहन मैं, धाया नंगे पायन ही,
'विकल' हुआ हूँ एक, पल नहीं पाया चैन॥
मरने न ग्राह को मैं, आया सुन गजराज,
और न तुझे ही देख आया अभय दान दैन।
प्रेम के प्रवाह से पयानिध में प्रेमी पेख,
पागल हो प्रेम का मैं, आया हूँ प्रसून लैन॥

[४६]

कोमल कुमर हैं कमल के समान मेरे,
घोर औ कठोर निशचर बलवान हैं।
रामअवतार गये, घर से न बाहर हा!
युद्ध की वो रीति कहाँ, जानते नादान हैं॥
लषण हृदय मेरा, राम सुखधाम विन,
जायगें निकल मुझ 'विकल' के प्रान हैं।
जान है तो जान रहे, जान जाये जान जाये,
जान को हूँ जान मेरी कैसे रहे जान हैं॥

[४७]

कैसी अनहोनी बात करते हो दीनबन्धु,
यही मजदूरी मेरा, जीवन सुधारना।
नाई कभी नाई से, न लेता बनवाई और,
धोबी को है धोबी की धुलाई में विचारना॥
सोचिये तो मेरी ही बिरादरी हो रघुवीर,
ऐसे लैन दैन का मुझे तो अधिकारना।
गंग से उतारा पार मैंने तुम्हें याद रहे,
'विकल' हूँ मुझे भव, सिन्धु से उतारना॥

[४८]

जाता है हमेशाके लिये न लौट आता फिर,
आता है तो अपना पता ही नहीं पाता है।
पाता है न कल पना 'विकल' अकल गई,
शान से कलेजे बीच, प्रेम बान खाता है॥
खाता है न दूब गया, दुनियांसे ऊब खूब,
ज्वाल में कमाल कर, जीवन जलाता है।
जाता है वो रङ्ग बद-रङ्ग दुनियाँ को कर,
विरुके लुङ्ग में, इरङ्ग रङ्ग जाता है॥

[४९]

दिनको दिखाता नहीं, दीन दुखी निज मुँह,
होते ही निशा के नहीं, नेक कल पाता है।
पटक पटक सर, नोंच डालता है पर,
प्रेम का परम पाठ, विश्व को पढ़ाता है॥
आंसुओं से धोता नित, दिलकी लगी के घाव,
चन्द्र चांदनी का, मरहम भी लगाता है।
किसके सहारे तन, जारे हा बिचारे बिन,
'विकल' अँगारे क्यों, चकोर चुग जाता है॥

[नैनाम]

[५०]

भूषण भला है भव्य, भारत के भाल का तू,
शत्रुओं के हमलों से, हमको बचाता है।
जंगल है तेरे जन्मदाता जड़ी बूंटियों के,
तू ही मानसून रोक, वारि बरसाता है॥
हिन्द का हितैषी कौन 'विकल' है तेरे सम,
पावन पवित्र गंगा, यमुना बहाता है।
होकर गुलाम कहीं, मान भी मिला है आह!
गिर गिरराज क्यों न, भूमि में समाता है॥

[५१]

दुनियां तिहारी ओर, देख रही एक टक,
उच्चता का पाठ तू ही, विश्व को पढ़ाता है।
खूब चतुराई गहराई में तराई की है,
कुछ भी न दिखे सब, कुछ ही दिखाता है॥
झर झर झरनों का, निमल 'विकल' जल,
सरस सुखद उर, नेह सरसाता है।
होकर गुलाम कहीं मान भी मिला है आह!
गिर गिरराज क्यों न, भूमिमें समाता है॥

[५२]

गाया गा रहा हूँ और गाऊँगा उन्हीं का यश,
आगे स्वाभिमान का, नमूना धर जाते हैं।
उनका हमेशा शीश, रहता हथेली पर,
मर के अमर हुये, नाम कर जाते हैं।
चलते हैं अस्त्रशस्त्र, जितने भी विश्व बीच,
करने पै यत्न घात्र, सभी भर जाते हैं।
तेग से नश्तर से न, तीर से मरे हैं वीर,
'विकल' सुवीर बात ही पै मर जाते हैं॥

[५३]

भीष्म वीर शैय्या पर सोये थे इसी के बल,
कीर्त्ति इसी से हुई पार्थ के निशानेकी।
भीम की भुजाओं में भरा था बल इसी बल,
रखना था शक्ति कृष्ण विश्व को हिलानेकी।
छाती पर हाथी खड़ा देखा इन आँखन से,
रामसूर्ती या मूर्ति इसी खजाने की॥
'कामनीके काममें 'विकल' कामना का नहीं,
करने प्रतिज्ञा धीर जीवन बिताने की॥

[पैंतीस]

[५४]

देखो भगवान ब्रह्म, ज्ञानियों की ओर आज,
करैं अपकर्म विद्या, पढ़ैं न पढ़ाते हैं।
लेना दान देना धर्म 'विकल' सिखाते रहे,
आज वही दर दर, भीख मांग लाते हैं ॥
जिन्दोंकोभी खाते जिन्द, मुर्दोंको भी खाते रिन्द,
जरा न लजाते मंद मति मरे जाते हैं।
बिस्तर उठाते कहीं, पैर पुजवाते कहीं,
पानी खींच लाते कहीं, रोटियाँ बनाते हैं ॥

[५५]

धाक सुन जिन क्षत्रियों की विश्व काँपता था,
उनकी ही बांह आज आलस ने पकड़ी।
हिल नहीं सकते हैं, एक डग आगे पीछे,
पगपराधीनता की, बेड़ियाँ हैं जकड़ी ॥
देखलो "विकल" दाने, दाने को तरस रहे,
भूल गये राग रंग, भूल गये छकड़ी।
किरच कटार तलवार तीर ताख अरे,
तीन चीज याद रही, नून तेल लकड़ी ॥

[५६]

धर्म व्यवसाय करते थे कृषि कर्म द्वारा,

आज श्रम जीवियों का, रक्त चूस जाते हैं।

'विकल' अनीति का न, ध्यान कैसा लैन दैन,

बसना उलट' नाम, दूसरा चलाते हैं॥

जीभ के चटोरे मुफ्त-खोरे महापापी नीच,

बेटी बेच खाते कभी, बेटा बेच खाते हैं।

लेट लेट पेट में हजम करते हैं पाप,

धर्मवीर सेठ कोई, पिग्ला कहाते हैं॥

[५७]

मानता हूँ मानव की, जाति विश्व बीच एक,

किन्तु भिन्न गुण कर्म, सब के बनाये हैं।

जैसा बीज वैसा फल 'विकल' विचार करो,

नीम पै कहो तो आम, किसने लगाये हैं॥

'ओम् भूर् भुव स्व' करैं वेद मंत्र जाप,

तीन तीन कान पै जनेऊ लटकाये हैं।

रंगे हुये स्यार हैं, भारत का भार आज,

भंगी औ चमार 'देवदूत' बन आये हैं॥

[संतोष]

[५८]

तेरी स्वर लहरी ने छींन, लिया मेरा दिल,
मुग्ध हो रहा हूँ मंद, मंद कल गान पर।
इंसा और हैवां की स्पष्ट परिभाषा आज,
होजा-कुर्बान देख, मुझ से कद्रदान पर॥
खूब जानता हूं पहचानता हूँ नस नस,
मुँह में दबाये बीन, हाथ है कमान पर।
बोल रे ! वधिक उप-हार चाहता क्या और,
जान दे रहा हूं मैं 'विकल' मृदु तान पर।

[५६]

हाथ में सुमरनी औ, बगल कतरनी है,
विध के विधान से न 'विकल' डरत हैं
छाती कंठ कान भाल, बांह पै सु गंग रज,
मानों भव सिन्धु से वो, आज ही तरत हैं
देखा कहीं मछली को, एक पैर खड़े हुए,
श्री सत्यदेव सोलह आने से लगत हैं
भला बला करैं अबला से रहैं दूर पर,
सबला निगल जांय, बगला भगत हैं

[६०]

बन में न बाग में न, सरिता तड़ाग तीर,
नभ में निहारता हूँ, नहीं दीख पाती हो।
प्रभु जानता है या कि, तुम जानती हो देवि,
कौन साधना में कहाँ, जीवन बिताती हो॥
कुहू कुहू मधुर, मधुर स्वर लहरी में,
किसकी 'विकल' भावनाओं को जगाती हो।
आती हो वसंत ही के, संग बस अंत कर,
'कोकिला कुमारी' कहो, कहाँ चली जाती हो॥

[६१]

रवि की प्रथम ही किरण, के चला वो संग,
निरख मुखारविन्द फूला न समाता है।
पान करता है मकरंद मंद मंद गन्ध,
ताप शीत पावस को, ध्यान में न लाता है॥
पल में कठिन से, कठिन काठ बींध कर,
'विकल' अमर द्वार, अपनी लगाता है।
फिर भी कमल की, सुकोमल कली के मध्य,
तड़फ तड़फ कर, मलिन्द मर जाता है॥

[उनतालीस]

[६२]

करुणानिधान आओ, मेरे करुणालय में,
दुख शोक नित नई, चिन्ता बरसाते हैं ।
'विकल' सहोदरा के, पीले होंगे कैसे हाथ,
अन्न से भी बालक न, पेट भर पाते हैं ॥
वृद्ध पिता जिनकी है, माता भी महान वृद्ध,
दोनों बेबसी में आँख, तर कर लाते हैं ।
दीनता दुलारी प्राण–प्यारी को उदास देख,
जीते जी हमारे अर-मान, मर जाते हैं ।

[६३]

केशव कृपा की कोर, करिये हमारी ओर,
रुकने न पाता आज, नैनन से नीर क्यों ।
सुनता हूँ साहसी के, साथी हैं सदैव आप,
'विकल' न बन पाती, कोई तदबीर क्यों ॥
घटती नहीं है नित, बढ़ती ही जाती देव,
विपदा हमारी हुई, द्रोपदी का चीर क्यों ।
दुनियाँ फिरी है जब, मुझसे हे दीन बन्धु,
फिरने न पाती आज, मेरी तकदीर क्यों ॥

[६४]

लाल लाल माँग में, लगाये मोती लाल लाल,
लाल लाल भाल पै, सुबेंदी लाल लाल है।
लाल लाल कानन में, लाल लाल झूमका हैं,
लाल लाल नासिका को, लटकन लाल है।
मुख लाल जीभ लाल, दाँतन की मेख लाल,
पान लाल होट लाल, गालन गुलाल है।
लाल लाल सारी की, किनारी लाल नारी लाल,
पहिरे 'त्रिकल' फूल, माल लाल लाल है॥

[६५]

लाल लाल हाथन पै, लाल लाल मेंहदी है
लाल लाल मुंदीका, नगीना लाल लाल है।
लाल लाल कंकन पै, मोहन सु लाल लाल,
लाल लाल चूड़ी लाल, बाजूबंद लाल है।
लाल लाल पलके पै, लाल लाल सौर लगी,
लाल लाल तकिये हैं, शाल लाल लाल है।
लाल लाल सारी की, किनारी लालनारी लाल,
लाल लाल पेट में, दुराये लाल लाल है॥

[इकतालीस]

[६६]

रती रन वास में, निवास करें पास पास,
एक ही बिछौने पै, मनोज के निशाने थे ।
सोते सुख नींद ऐसी, 'विकल' लगीं न आंख,
अपने लिये वो नया, विश्व ही बसाने थे ।
पीले पड़े लख कै, पपीहरी विहंगन का,
सुन कलरव लोक, लाज सों लजाने थे ।
कंप उठैं मन में, डराने मन मानै नहीं,
तिया पिया अङ्क लपटाने पट ताने थे ॥

[६७]

नई थी नवेली अलबेली बल खाती फिरै,
रस रीत जानै न, खड़ी थी काम शाला में ।
लंक लचकाय परयंक को बिछाय रही,
देख पति पौढ़ गई, झाँप मुँह दुशाला में ।
छूवत शरीर कहीं, बिजली सी दौड़ गई,
जी भर नहाये ना, अघाये प्रेम नाला में ।
आखांपे तियाकीलगी, 'विकल' पियाकीआँख
चित्र से खड़े थे दो, विचित्र चित्रशाला में ॥

[६८]

शीला शरमीली सी, सुरीली सु रसीली शुभ,
सुन्दर सजीली शांत, साने की सलाका सी ।
काम कामिनी सी किन्नरी सी कमला सी कीर्ति,
कंज की कली सी, कलाधर की कला का सी ।
बार बार बिहरै बखेर बार बार बाम,
बर बिन 'विमल' है बावली बलाका सी ।
चित चाह चितै चारु, चखु चन्द्र चन्द्रमुखी
चंचल चकोर चौंध चपला चलाका सी ॥

[६९]

केला, कद्दू, कचनार, करेला, करौंदा, कैर,
ककड़ी न कमरख, कौंदू कटहर में।
भिंडी, नाग, टिंडा मूली, गाजर न बैंगन में,
कंद, शिमि कंद, में, न अरवी, मटर में ॥
शलजम न मेथी साग, बथुआ चने का साग,
साठी, चंद साठी में न, नेम, सूखे तर में ।
नचौंटा कनात में न, भरौंटा, कचालू में न
'विमल' जो आया मजा, चारु टिमाटर में ॥

[कैलाभोग]

[७०]

बुझत चिराग आन, कान पै लगाई तान,
ऐसी तान तान सेन, तान भूल जाता है।
सारी निश एक पल, 'विकल' लगी न आंख,
ताल पै तमाचों की, तराना खूब गाता है।
हाट, बाट, मन्दिर, मकान, बाग कूप देखे,
हरजा हजूर का, जहूर ही दिखाता है।
घंटा घर चीख चीख, कहता उठाये हाथ,
मैनपुरी माता मच्छरों की जन्म दाता है॥

[७१]

खोपड़ी पै टोकरीसी, दीदों से न दीखै नेक,
तेली का हो बैल वैसा, थूथड़ा दिखात है।
मुँह में सलाई दाब, उस में लगाई आग,
थूकत है खून धुआं, खूब ही उड़ात है।
बोली भी निराली कुछ, समझ न आती बात,
पूँछत 'विकल' मुझे, कोई न बतात है
घंटी का बजैया खुर, दोनों ही चलैया दाब,
टांगन दुपैया भगा, भैया कौन जात है।

[७२]

छोटी सी है जान मेरी, शत्रु दल प्रबल है,
शूल औ त्रिशूल लिये, गिने भी न जाते हैं।
मारते हैं भाले मेरी, कमर में कस कर,
कभी कभी सीने पै भी, चोट वो चलाते हैं॥
आधी निशि बीत गई 'विकल' लगी न आँख,
आपदा निहार सभी, आपको बुलाते हैं।
टेरत हौं हूँ नाथ, देरन किते हैं आप,
दौड़ो भगवान खटमल खाये जाते हैं॥

[७३]

भल जीरा कांजी सोंठ, चटनी की चाट नहीं,
गपता चनौरि का न, उड़दी मगौड़ी का।
चंद्रिया पेंठा नहीं, न सेवी नमकीन,
हलुआ न पुआ पूरी, खस्ता कचौड़ी का॥
हापुड़ का पापड़, एक झापड़ में चूर करूँ,
मांगता गणेशा है, तिकोना तीन कौड़ी का।
कहाँ बड़ा दाल सेव, पावे न निहारे दिल,
'विकल' हुआ है आलूप्याज की पकौड़ी का॥

[७४]

सम्पति नसाई स्वंग, तिय को पठाई हुआ,
जीव दुख दाई तब, मूड सुडा लेते हैं।
कोई लिये दंडी बने, पूरे ही पाखंडी हाय,
चीमटा बजाय कोई, कान फटा लेते हैं॥
मेवा औ मिठाई कहीं, चाटी जा मलाई कहीं,
सुलफा सफाई कहीं, प्याला चढ़ा लेते हैं।
ऐसी जा जमाई कहीं, 'विकल' जमाई बने,
माई माई करके, लुगाई बना लेते हैं॥

[७५]

त्याग अप कर्म सत्, कर्म में लगा रे मन,
पल का भरोसा नहीं, जाग जिन्दगानी में।
अकल बिकानी साँच, झूँठ भी न जानी हाय,
करै मन मानी रहै, चूर अभिमानी में॥
सभी श्रुति स्मृति देखीं 'विकल' लिखा है कहाँ,
वेद न पुराण में न, कथा न कहानी में
माता पिता मारै नित, पूजा करै मन्दिर में,
डूब मर उल्लू हाय, चुल्लू भर पानी में

[७६]

बस गई रुक्मणि, दिल में ना लाया उड़ा,
देख लिया जैसे तुम लाज के बचैया हो।
द्रौपदी ने चीर चीर बांधा तेरी उँगली पै,
कौरव सभा में आके, चीर के बढ़ैया हो॥
चावल सुदामा के 'विकल' सब चाब लिये,
देते क्यों न एक चट, मार के पढ़ैया हो।
रहने दो भैया बड़े, स्वार्थी कन्हैया बस,
आप बाप मैया होके, बन्धन कटैया हो॥

[७७]

छीन छीन शबरी के, खाये भर पेट बेर,
तार दिया उसको तो, कौन सी भलाई की।
क्यों न गिनता तू गीध, गजको निवाकोचाल,
तेरी जानकी के हित, जान भी गंवाई थी॥
रावणको मार दिया, राज क्या विभीषण को,
लंका जीतने की राह, उसने बताई थी।
सीतानम्रताई प्रभुताई तेरी देखी सब,
इसमें बड़ाई क्या, ठठेरे बनाई थी॥

[मैनासीम]

[७८]

दीप मालिका के दिन, घायल पड़े हैं हम,
देखना है दीनता का, घाव कौन धोता है।
जागे हैं विदेश देश, जागा है जहान सब,
घोड़े बेच जाने मेरा, भाग्य कहाँ सोता है॥
कोई दिल वाला यदि, देखे तो दिखाऊँ चीर,
सिसक सिसक चुप, चाप हंस रोता है।
भूख से 'विकल' बाल, मांगते हैं खील आज,
सुनके कलेजा हाय! खील खील होता है॥

[७९]

आज दीनता की परिभाषा मेरे योद हुई,
आंसुओं से विधना की, रेख को मिटाऊँ क्या।
करते किनारा अब, साथी कौन विपदा में,
'विकल' अभागा मेरा, भाग आज माऊँ क्या॥
दीखती निराशा ही निराशा जब चारों ओर,
तुम ही बताओ तब, आनन्द मनाऊँ क्या।
जाओ लौट जाओ दीप, मालिका न आओ मेरा,
दिल जलता है देवि! दीपक जलाऊँ क्या॥

ताजमहल

देखकर ताज को होगया मैं 'विकल'
दर्द दीवार दर का कहूँ क्या बयाँ ।
दिल ऐसा हिला कुछ कह न सका,
इसका भी कभी क्या होगा समाँ ॥
सिर नीचा किये हुये सुनता रहा,
आरही थी निराली यही दो सदा ।
मुमताजे जहाँ आह ! शाहेजहाँ,
मुमताजे जहाँ आह ! शाहेजहाँ ॥

शाहजहाँ की अश्रु-विन्दु

आह से खौल उठी यमुना,
बनभाप हवा में उड़ा करती है ।
घोर घटा की निराली छटा,
अभ्यन्तर जाय छहा करती है ॥
पीव कहाँ मम पीव कहाँ मुमताज,
जहाँ यूँ रटा करती है ।
रूह से शाहजहाँ की 'विकल'
नव अश्रु की बिन्दु गिरा करती है ॥

[उद्भवचाम]

अशोक स्तम्भ

था अशोक न शोक का नाम कहीं,
अब शोक घटा घहराने लगी।
अकुलाने लगी करुणा करुणा,
लखकै दृग जल बरसाने लगी॥
नीचे निरखा ऊपर को लखा,
न 'विकल' समझा समझाने लगी।
हा! शोक अशोक इतै को गया,
उठा हाथ को लाट बताने लगी॥

जीने का जीवन

जीने ने कहा जीना है वृथा अरे,
काहे को मूर्ख तू आन चढ़ा।
यदि देखनी हाय विभूतियों को,
पत्थर सा हृदय तू करले कड़ा॥
पत्थर ने कहा क्या पत्थर अमर,
दुर्बुद्धि पै हा! पत्थर न पड़ा
सर मार रहा पत्थर में 'विकल',
पत्थर पै रहा पत्थर सा खड़ा।

फीरोजशाह की बावड़ी

फीरोज़ बता कै रोज जिया,
आवाज़ यही हक आ रही थी।
सुख साज औ ताज कहाँ गया वह,
मन ही मन में मुस्का रही थी॥
उर हूक उलूक से हूक उठा,
सन्ध्या अपनी छवि छा रही थी॥
तब बावढ़ी बावली सी हो 'विकल'
प्रयलंकर गान को गा रही थी॥

नूरजहाँ

जो न उतरी थी पलकों से नीचे कभी,
जिसे पलकों पै रखता था शाहेजमाँ।
एशो अशरत से पाली भराली गई,
नाचता था इशारे पै हिन्दोस्ताँ॥
हेर कर हारतीं हूर थीं नूर को,
नूर नूरे जहाँ का गया वह कहाँ।
दैव की गति न जानी गई हा! 'विकल'
सो रही ख़ाक में आज नूरेजहाँ॥

[इक्यावन]

ब्रजबिहारी से

हम प्रेम से तोरे लला है 'विकल'
गति जानपरी तिहरे मन की
अब आओगे काहे को बृज में श्याम;
हवा तुम्हें लागी है गोरन की।
जब खाने को बिस्कुट चाय मिलै,
पर चाह कहा रही माखन की
बृज गाँव वधूटी से क्यों अटको,
अब ब्यूटी बिलोक कै मैमन की।

दीप दान

कर्तव्य ही सार है दुनियां में;
कर्त्तव्य मैं अपना निभा रहा हूँ
घनघोर घटा घहराये भले,
अंधियारी निशा की मिटा रहा हूँ।
भूला हुआ कोई ठिकाने लगे,
इस आश पै मैं टिमटिमा रहा हूँ
हा ! सूख चुका है स्नेह 'विकल',
मैं मरा हुआ भी मरा ना रहा हूँ।

[वामन]

प्रतिशोध



[१]

वंश दोनों ही विध्वंस हो जायँगे,
यदि बुद्धि न उनकी ठिकाने लगी।
कौरवों को कोई जाके समझाय दे,
धर्मसुत को ये चिन्ता जलाने लगी॥
जब जाने लगे हरि द्रोपदी आ,
हो अधीर महा अकुलाने लगी।
भय शोक लिपा कर में कर गह,
भगवान को यों समझाने लगी॥
अब सन्धि की सन्धि रही है कहाँ,
प्रभो भूलके सन्धि का गीत न गाना।
याद है याद रहे हरि को,
मम केश खुले इन्हें भूल न जाना॥

जिस पर था बिठाना विचारा मुझे,
उसी जंघा के रक्त से केश बंधाना।
याद है याद रहे हरि को,
मम केश खुले इन्हें भूल न जाना॥

[५]

सुख साज न चाहिये राज मुझे,
अभिलाषा नहीं सनमान की हूँ।
अबला नहीं जानों बला हूँ 'विकल'
दुशमन दुर्योधन के प्रान का हूँ॥
प्रतिशोध की आग लगी हुई है,
उर में दृढ़ता लिये आन की हूँ।
कुछ चिन्ता नहीं परिणाम हो क्या,
मैं भूखी उसी अपमान की हूँ॥
रक्त से कौरवों के बहाना नदी या,
पाण्डवों का जड़ मूल मिटाना।
याद है याद रहे हरि को,
मम केश खुले इन्हें भूल न जाना॥

[छप्पन]

प्रेम का पथ

प्रेम का पथ है निराला ।

[१]

उस भयंकर सी निशा में ।

छिप रहा था किस दिशा में ।

हँस पड़ी सहसा प्रभा जब,

मुँह प्रभाकर ने निकाला ॥

प्रेम का पथ है निराला ।

[२]

व्योम ने दृग जल बहाया ।

दोष ऊषा को लगाया ।

गुन गुनाई प्रात - वेला,

होगया जग में उजाला ॥

प्रेम का पथ है निराला ।

[मनमोहन]

[३]

सो रहे उनको जगाती ।
और प्यासों को पिलाती ॥
कौन सुर बाला बहाती,
विश्व में अमरत्व हाला ॥
प्रेम का पथ है निराला ।

[४]

उस हिमालय के शिखर पर ।
हिम जमा ज्यों श्वेत पत्थर ॥
बाल रवि नित सहस कर से,
खोलता शिव का शिवाला ॥
प्रेम का पथ है निराला ।

[५]

गर्जती किस हेतु गंगे ।
कर पसारे पैर नंगे ।
श्वेत खादी धार भागी,
जा रही हो कोई बाला ।
प्रेम का पथ है निराला ।

[६]

अर्जना में लीन निर्झर ।
गूँजता हर ओर हर हर ॥
तर्जनी से पूजने को,
जल कणों ने जल उछाला ॥
प्रेम का पथ है निराला ।

[७]

पक्षियों का प्रेम कलरव ।
गान करते थे यही सब ॥
मोह ममता का किसी ने,
खूब जग में जाल डाला ॥
प्रेम का पथ है निराला ।

[८]

घूमते स्वच्छंद वनचर ।
भेद आपस का भुला कर ॥
उच्च स्वर से बोलते थे,
है उसी का बोल बाला ॥
प्रेम का पथ है निराला ।

[उनमठ]

[९]

प्रेम के वश झूमते थे ।
फूल आनन चूमते थे ॥
कर रहीं संकोच कलियाँ,
ओढ़ नव पल्लव दुशाला ॥
प्रेम का पथ है निराला ।

[१०]

ताड़ किसको ताड़ते थे ।
बैर कब का काढ़ते थे ॥
माल का उर सालने को,
भाल ने भाला संभाला ॥
प्रेम का पथ है निराला ।

[११]

साधना में लीन ऋषिवर ।
मौन साधे हैं मुनिश्वर ॥
पान करती बस यही है,
प्रेम प्रभु की प्रेम शाला ॥
प्रेम का पथ है निराला ।

[१२]

ख़ाक को तन पर रमाले ।
ख़ाक में आसन जमाले ॥
ख़ाक ही ने ख़ाक को,
क्यों ख़ाक के साँचे में ढाला ॥
प्रेम का पथ है निराला ।

[१३]

थक गई सन्ध्या वियोगिन ।
रख रही थी पैर गिन गिन ॥
आँसुओं से क्यों न धोवे,
अस्त रवि का तम्र छाला ॥
प्रेम का पथ है निराला ।

[१४]

हो गईं लोहित दिशायें ।
कन्दरायें औ गुफायें ॥
नभ में किसकी आरती को,
दिल जलों ने दीप पाला ॥
प्रेम का पथ है निराला ।

[१५]

छिप गईं सब तारिकायें ।
छा गईं काली घटायें ॥
चमकी चपला कौन रिमझिम,
वारि था बरसाने वाला ॥
प्रेम का पथ है निराला ।

[१६]

एक ही भूचाल आया ।
क्षणिक भूधर को गिराया ॥
तब लगी पृथ्वी उगलने,
राख लावा आग ज्वाला ॥
प्रेम का पथ है निराला ।

[१७]

सिन्धु को तू बिन्दु करदे ।
बिन्दु से शुभ सिन्धु भरदे
तेरी अपरम्पार माया,
से पड़ा किसका न पाला
प्रेम का पथ है निराला ।

[१८]

कौन तेरा भेद जाने ।
हठ वृथा विज्ञान ठाने ॥
है किसे यह ज्ञात पल में,
क्या किसी का होने वाला ॥
प्रेम का पथ है निराला ।

[१९]

नापना का भी पता क्या ।
सब पता है ला पता क्या ॥
जो समझ पाता उसी के,
ढांकता मुँह आप नाला ॥
प्रेम का पथ है निराला ।

[२०]

प्रेम रस तूने पिलाया ।
है 'विकल' कुछ भेंट लाया ॥
प्रेम प्रतिमा के गले में,
डालने प्रेमाश्रु माला ॥
प्रेम का पथ है निराला ।

[नरेन्द्र]

नीरस जीवन



चंचल विचार, चंचल मन में ।
चंचल विचार, चंचल मन में ॥
आयें आयें सुरबालायें, लायें कर करमें जय मालायें ।
हर्षित हो मुझ को हर्षायें, मेरे ही गल में पहिनायें ॥
सर्वस्व निछावर कर दूँगा ।
उनके उस प्रेमालिंगन में ॥
योगी बन भस्म रमाता हूँ, मैं घर घर अलख जगाता हूँ ।
कर मलता हूँ पछताता हूँ, फिर सोच यही रह जाता हूँ ॥
जिनसे न मकानन ही में बना ।
उनसे क्या बनेगा कानन में ॥
क्या करूँ विश्व का लेके राज, मैं क्यों बाधूँ काटों का ताज ।
जो गई छवि उर में विराज, तो मन कर डालेगा अकाज ॥
राजा ड्यूक विडंसर होगा ।
फंस गया यदि कहीं सिपसन में ॥
सुन रक्खा है तेरा प्रताप, फिर कौन कठिन है मेरे पाप ॥
जगदीश मिटाओ सभी ताप, बतला दूँगा सम्बंध आप ।
हूं 'विकल' दीन हे ! दीनबन्धु
रहने दो पड़ा निज चरनन में ॥
